किन्नर साहित्य: लोकसाहित्य के विशेष संदर्भ में

डॉ.रूपाली सारये

शोधपत्र सारांश - किन्नरों की उत्पत्ति के विषय में विचार चर्चा करते हैं तो लोकमत प्रचलित है कि जब शिव और माता पार्वती ने एकाकार होकर अर्धनारीश्वर का रूप धारण किया तो उसी परंपरा में चलकर उनके अनुयाई स्त्री और पुरुष अर्धनारीश्वर के रूप में इन हिजड़ों की उत्पत्ति हुई देखा जाए तो हिजड़ों के समुदाय में शिव और पार्वती की पूजा अनिवार्य कही गई है वह स्वयं को शिव और पार्वती के अर्धनारीश्वर रूप का ही अवतार मानते हैं।"किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है, जिसके प्रधान केंद्र हिमवत् और हेमकूट थे। वर्तमान में किन्नर हिमालय में आधुनिक कन्नोर प्रदेश के पहाड़ी लोगों को कहा जाता है, जिनकी भाषा कन्नौरी, गलचा, लाहौली आदि बोलियों के परिवार की है। आजकल हिजड़ों के लिए भी किन्नर शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन ये जाति आलौकिक और जादुई थी। प्रस्तुत शोधपत्र में इसका विस्तार से उल्लेख किया गया है।

कूट शब्द - किन्नर, शिव और माता पार्वती, अर्धनारीश्वर, हिमालय, हिमवत्, हेमकूट,कन्नौरी, गलचा, लाहौली।

प्राचीन काल से वर्तमान साहित्य के अनेक संदर्भ में किन्नर शब्द का प्रयोग मिलता है। हर संदर्भ में किन्नर शब्द के पृथक- पृथक अर्थ प्राप्त होते हैं। जम्मू दीप के भाग-1 में किन्नर शब्द के पर्यायवाची शब्द किंपुरुष का संदर्भ मिलता है - "भारतं प्रथमं वर्ष ततः किंपुरुष स्मृतम्।"1 किन्नरेश शब्द 'धन के राजा' कुबेर का एक विशेषण कहा गया है।कुबेर शब्द के 'कु'अक्षर का अर्थ संस्कृत में 'बुरा' कहा गया है जैसे कुमाता, कुपुत्र ,कुमार्ग आदि शब्दों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। दूसरे शब्द किम्-नरेश अथवा' किन्नर+ईश'पुराणों अर्थात् बुराई का राजा अथवा धन का देवता कहा गया है पूर्व में हिमाचल में बसने वाले किन्नौर देश के निवासी किसी विशिष्ट समुदाय को भी किन्नर कहा गया है। वेबदुनिया के एक लेख प्राचीन काल की अलौकिक जातियों का रहस्य में कहा गया है-

"किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है, जिसके प्रधान केंद्र हिमवत् और हेमकूट थे। वर्तमान में किन्नर हिमालय में आधुनिक कन्नोर प्रदेश के पहाड़ी लोगों को कहा जाता है, जिनकी भाषा कन्नौरी, गलचा, लाहौली आदि बोलियों के परिवार की है। आजकल हिजड़ों के लिए भी किन्नर शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन ये जाति आलौकिक और जादुई थी। पौराणिक ग्रन्थों, वेदों-पुराणों और साहित्य तक में किन्नर हिमालय क्षेत्र में बसने वाली अति प्रतिष्ठित व महत्वपूर्ण आदिम जाति है जिसके वंशज वर्तमान जनजातीय जिला किन्नौर के निवासी माने जाते हैं। संविधान में भी इन्हें किन्नौरा और किन्नर से संबोधित किया गया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने किन्नौर जिसे वे प्रमाण के साथ प्राचीन 'किन्नर देश' मानते हैं, इस क्षेत्र की अनेक यात्राएं की हैं और कई पुस्तकें लिखी हैं। किन्नर देश और किन्नर जाति का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व समझने के लिए उनकी बहुचर्चित पुस्तकें 'किन्नर देश' और 'हिमाचल' है। उनके अनुसार 'यह किन्नर देश है। महाभारत के दिग्विजय पर्व में अर्जुन का किन्नरों के देश में जाने का वर्णन आता है। एक शाप के चलते अर्जुन को किन्नर बनना पड़ा था।"2

स्पष्ट है कि किन्नर शब्द का प्रयोग अलग-अलग शब्द रूप से किया गया है परंतु कालांतर में इस शब्द का प्रयोग परिवर्तित हो गया इस विषय में मिलते संदर्भों के अनुसार सृजन सरोकार अपने लेख संस्कृति किन्नर में कहते हैं-

"किन्नर शब्द का प्रयोग किन्नर की नवरा जनजाति की अस्मिता पर संकट है किसी भी प्राचीन धार्मिक ग्रंथ वेद पुराण उपनिषद शब्दकोश साहित्यिक कृतियों में किन्नर शब्द थर्ड जेंडर के लिए इस्तेमाल नहीं हुआ है।"3

अतः स्पष्ट है कि किन्नर शब्द का अर्थ प्रयोग प्राचीन काल में भिन्न रूप में होता था तथा कालांतर में हिजड़ों के लिए यह शब्द रूढ़ हो गया परंतु जहां तक देखा जाए तो वर्तमान में किन्नर शब्द का प्रयोग स्वयं हिजड़े भी वर्जित मानते हैं।

यदि हम किन्नरों की उत्पत्ति के विषय में विचार चर्चा करते हैं तो लोकमत प्रचलित है कि जब शिव और माता पार्वती ने एकाकार होकर अर्धनारीश्वर का रूप धारण किया तो उसी परंपरा में चलकर उनके अनुयाई स्त्री और पुरुष अर्धनारीश्वर के रूप में इन हिजड़ों की उत्पत्ति हुई देखा जाए तो हिजड़ों के समुदाय में शिव और पार्वती की पूजा अनिवार्य कही गई है वह स्वयं को शिव और पार्वती के अर्धनारीश्वर रूप का ही अवतार मानते हैं।

एक अन्य लोक कथा में कहा गया है" राजा प्रजापति के यहां इल नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ जो बड़ा ही प्रतापी व दयालु राजा बना। राजा इल शिकार को बहुत पसंद करते थे।एक बार जब शिकार करने गए तो बहुत दिनों का पड़ाव उन्होंने किया घूमते घूमते जंगल के बहुत अंदर तक वह चले गए। संयोगवश उसी समय उसी स्थान पर माता पार्वती और भगवान शिव विचरण कर रहे थे परंतु

भगवान शिव ने माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए स्त्री का रूप को धारण किया हुआ था और जब भगवान शिव ने स्त्री का रूप धारण किया तो उस स्थान के उस जंगल के हर चर -अचर ,जड़ -चेतन ,पशु-पक्षी, पेड़-पौधे ने भी स्त्री रूप धारण कर लिया।

ऐसे समय में जब राजा इनका उस स्थान का संपर्क हुआ। तो वह भी स्त्री बन गए जब उन्होंने स्वयं को देखा तो बहुत दुखी हुए। दुखी होने पर उन्होंने भगवान शिव की आराधना की और उनसे माफी मांग कर पुनः पुरुषत्व प्राप्त करने की इच्छा की परंतु प्रभु शिव ने उन्हें मना कर दिया। ऐसे में राजा इन ने माता पार्वती की आराधना की और उन्हें प्रसन्न करके पुरुषत्व का वरदान मांगा माता पार्वती ने राजा इनको कहा कि जो तुम मांग रहे हो वहां मैं जैसा वरदान तुम चाहते हो उसके दाता तो भगवान शिव है मैं सिर्फ आधा भाग ही दे पाऊंगी।

तुम सोच कर बताओ कि तुम अपना जीवन आधा स्त्री और आधे पुरुष रूप में व्यतीत कर सकते हो इसी के साथ जब तुम पुरुष रूप में रहोगे तो तुम अपना स्त्री रूप याद नहीं रख पाओगे और जब स्त्री रूप में रहोगे तो पुरुष पुरुष को याद नहीं कर पाओगे राजा इस बात के लिए तैयार हो गए परंतु उनके साथी सैनिक स्त्री रूप में ही रह गए।"4

इस तरह किन्नरों की उत्पत्ति के प्रणाम लोक साहित्य में प्राप्त होते हैं एक अन्य लोक कथा में किन्नरों के बारे में बताया गया है मालवा राजस्थान के क्षेत्र में लोक देवता जूण कुवंर का नाम बहुत प्रसिद्ध है। एक बार जब एक किन्नर जूण कुवंर की महिमा को सुनकर उनके मेले में गया और उनके स्थान या देवरे पर जाकर संतान उत्पत्ति की मन्नत मांगी तो जूण कुवंर जी ने प्रसन्न होकर उसको संतान प्राप्ति का आशीर्वाद दिया।किन्नर खुशी-खुशी अपने घर आया और सबको यह बात उसने सुनाई।कुछ समय बाद उसे एक संतान की प्राप्ति हुई।इस महिमा को सुनकर एक दूसरा किन्नर उनके देवरे गया और उसने भी संतान उत्पत्ति की इच्छा जाहिर की उस समय जूणकुवंर ने प्रकट होकर कहा कि कि तुम्हें संतान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।इस पर किन्नर बहुत नाराज हुआ उसने कहा कि आपने एक अन्य किन्नर को तो संतान उत्पत्ति का वरदान दिया है तो मुझे क्यों नहीं ?

तब जूण कुंवर जी ने उनको समझाया कि किन्नरों में भी दो प्रकार होते हैं एक किन्नर जो होता है उसमें मादा के गुण अधिक होते हैं और दूसरे के नर में पुरुष के गुण इस तरह से जो किन्नर पहले वरदान पा रहा था उसमें मादा के गुण अधिक थे और इसलिए वह संतान की उत्पत्ति कर सकता था परंतु तुम्हारे अंदर पुरुष के गुण अधिक है और तुम संतानोत्पत्ति के योग्य नहीं हो इसलिए मैं वरदान दे नहीं दे सकता।"5

इस तरह अलग-अलग संदर्भों में लोक साहित्य अन्य साहित्य में किन्नरों की कई कथाएं गाथाएं गाथाओं के संदर्भ प्राप्त होते रहते हैं समाज में किन्नरों को कहीं-कहीं बहुत सम्मान प्राप्त होता है इनकी दुआओं के लिए लोग इन को दान पुण्य करते हैं वही कहीं-कहीं इनकी भिक्षावृत्ति और

वेश्यावृत्ति जैसी घटनाओं को सुनकर इन से पीछा छुड़ाना चाहते हैं। ऐसे अनेकों संदर्भों को समझना शेष है। किन्नर साहित्य बड़ा वृहद है और चिंतन योग्य है जिस तरह वर्तमान साहित्य में आज हम अनेकों उपन्यास व चर्चाएं हो रही है अतएव हम जब किन्नर साहित्य के ऊपर देखते हैं तो पाते हैं कि एक वर्ग ऐसा भी है सामाजिक संवेदना और से अछूता रह गया है जिन्हें बहुत प्रेम की और अपनेपन की आवश्यकता है बहुत सहारे की आवश्यकता है जिस वर्ग को हमारे साहित्य समाज ने भी बहुत देर बाद जाना आज आवश्यकता है एक वैचारिक पृष्ठभूमि की के इनके विषय में बात की जाए और इनकी उन्नति के विषय में बात की जाए उनकी संवेदनाओं के बारे में बात की जाए।अतः हम अपने साहित्य के द्वारा निरंतर प्रयास करते रहेंगे कि एक वर्ग विशेष को हम कहीं से भी अपने आपको अछूता महसूस ना करने दे।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. विष्णु पुराण जंबूदीप भाग 1
2. वेबदुनिया :प्राचीन काल के अलौकिक जातियों का रहस्यपृ.2
3. एसआर हरनौट:सृजन सरोकार संस्कृति किन्नर, 1 जुलाई 2018
4. अदिति शर्मा से प्राप्त
5. पूरन सहगल: लोक देवता जूणकुवंर,मनासा प्रकाशन, पृ.36